(शिर्क–ओ–बिद्अ़त के ख़िलाफ़ ऐलान–ए–जंग)
/(सर्वाधिकार लेखकाधीन)

आ़ला हज़रत का फ़तवा
जुलाहे,मोची,नाई और मनिहार......?

लेखक
खुर्शीद अ़ब्दुर्रशीद 'मुहम्मदी' (एम0ए0)

इस किताब के सारे हवाले लेखक के पास मौजूद हैं।

प्रथम बार – 1000 प्रतियां

प्रकाशित – नवम्बर, सन् 2011 ई0

सहयोग राशि – 40/ – रू0

—:प्रकाशक:—

प्त्क्ह

इस्लामिक रिसर्च एण्ड दा'वा सेन्टर

न्दकमत.प्सांउपब ॅमसतिम ैवबपमजलए डपत्रंचनत;त्महकण्द्ध

कटरा कोतवाली के पीछे, मुहम्मदी गली
मिर्ज़ापुर – 231001 (यू0पी0)

http://salfibooks.blogspot.com

मो0 – 9919737053
मउंपसरूपेसंउपबतमेमंतबी01/लीववण्बवउ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मेरे दीनी भाईयो! अस्सलामो अ़लैकुम वरहमतुल्लाह व बरकातहू।

इस्लामिक रिसर्च एण्ड दा'वा सेण्टर ने ''शिर्क–ओ–बिद्अ़त के ख़िलाफ़ ऐलान–ए–जंग'' की एक मुहिम छेड़ रखी है और आपके बीच बराबर हिन्दी में इश्तिहार या किताबचे (कुरआन–ओ–हदीस से मुदल्लल) पहुॅचा रही है। इसके अ़लावा ओ़लमा की तक़रीरें–मुख़ालिफ़ों से मुबाहिसे और चुनौतियों के साथ ही साथ इस्लामिक सी0डी0, डी0वी0डी0 व किताबों के ज़रिये भी कुरआन–ओ–हदीस की सही जानकारी आप लोगों तक पहुॅचाने का काम कर रही है और अल्लाह तआ़ला का बहुत–बहुत शुक्र–ओ–एहसान है कि हमारे इस मुहिम में, अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल–ओ–करम से कई लोगों ने शिर्क–ओ–बिद्अ़त से तौबा करके हिस्सा लेना भी शुरू कर दिया है और काफी तेज़ी से लोग हमारी दाअ़्वत से मुतास्सिर होकर हमारे इस नेक काम में हमारे साथ जुड़ रहे हैं, क्योंकि हमारी दाअ़्वत हक़ की दाअ़्वत है, कुरआन की दाअ़्वत है, हदीस की दाअ़्वत है। हमारी दाअ़्वत का

खुलासा ये है कि अल्लाह तआ़ला ने दो हाथ दिये हैं और अल्लाह के प्यारे नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने अपने वफ़ात से पहले हमें ये फ़रमा दिया था कि ''मैं तुम्हारे बीच दो चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ, एक अल्लाह की किताब दूसरी मेरी सुन्नत। जो इन्हें मज़बूती से पकड़ लेगा वो कभी गुमराह नहीं होगा।'' इसके अ़लावा ये भी बताया कि दीन में हर नया काम बिद्अ़त है, हर बिद्अ़त गुमराही है और गुमराही जहन्नम में ले जाने वाली है। (हदीस)

तो एक हाथ में अल्लाह का कुरआन और दूसरे हाथ में नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का फ़रमान। बस इन दोनों चीज़ों को पकड़ लें, न तीसरा कोई हाथ और न ही तीसरी कोई चीज़। अब हर किसी की बात को हम इससे मिला लें अगर मिल जाये तो ले लें और अगर नहीं मिले तो उसे जूते की नोक पर उड़ा दें, क्योंकि वे अल्लाह और रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की बात नहीं है, इसलिए बिद्अ़त है और वो हमें गुमराह कर देगी और गुमराही जहन्नम में ले जायेगी। बस यही हमारी दाअ़वत है–अब बताईये हम क्या ग़लत बात कर रहे हैं? लोग हमें वहाबी–ग़ैर मुक़ल्लिद,–गुमराह–मुरतद–

काफिर'' और न जाने क्या–क्या कह जाते हैं और उन्हें अल्लाह से डर भी नहीं लगता कि वो हमारे ऊपर इन झूठे और ग़लत इल्ज़ामात का क्या जवाब देंगे। ख़ैर..... अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि उन्हें भी वो हिदायत नसीब फ़रमाये और तौफ़ीक़ दे कि अपने–अपने घरों में रखे हुए क़ुरआन और हदीसों को जो कि कपड़ों के गिलाफ़ों में बन्द पड़े–पड़े धूल चाट रहे होंगे उसे तर्जुमे के साथ पढ़ें–समझें और तहक़ीक़ करें। फिर उस पर अ़मल करें। (आमीन)

अब हम आपके सामने इस ज़माने के भोले–भाले, नादान और कम इल्म मुसलमान भाईयों के पॉचवें इमाम मुजद्दिदे दीन–ए–मिल्लत हुजूर पुर नूर आ़ला हज़रत बरेलवी साहब का एक फ़तवा जिसमें **जुलाहे – खाल पकाने वाले–मोची–नाई और मनिहार** ये सब बिरादरियां नीच और ज़लील हैं, लिखा गया। सुबूत के तौर पर उनकी किताबों में लिखी पंक्तियों की फोटो कापियां भी (हिन्दी तर्जुमे के साथ) पेश कर दे रहे हैं ताकि आप हज़रात उसे असल किताब में मिलाकर देख सकें।

जुलाहे खाल पकाने वाले–मोची–नाई मनिहार, ये सब ज़लील हैं

(फ़तावा रज़विया, जिल्द–5, पेज–44, विषय–सूचि में)

–:हिन्दी तर्जुमाः–

453– अगर नहीं हो पेशेवर जो अपने ज़लील पेशों के साथ लगे हों ये आ़लिम हों जब भी शरीफ़ों के बराबर सकते।

453– आ़लिम हमारे शहर में सय्यदानियॉं, पठान या मुग़ल से शर्म नहीं करतीं, हां ज़लील पेशे वाले वो अगर आ़लिम हों जब भी आ़र (शर्म–बुराई) ख़त्म नहीं होती।

453– का हो, ये अगर ज़लील पेशेवरों से कोई आ़लिम हो और वो अपने पेशे को इतनी मुद्दत से छोड़ चुका हो कि लोग उसे भूल गये हों और दिलों में उस आदमी महत्व और नज़रों में अ़ज़मत (महानता) हो गयी अब उससे शरीफ़ों की बेटियों को शर्म न हो तो भी बराबरी (कुफ़ू) हो सकेगा।

हिन्दी तर्जुमा, किताबुन्निकाह, पेज 453

तर्जुमा–फिर मैं कहता हूँ कि इसकी पाबन्दी भी ज़रूरी है कि वो उन लोगों में से भी न हों जो कमतरी (अत्यन्त तुच्छ) और हिक़ारत (घृणा–तिरस्कार) व ज़िल्लत में मशहूर व माअ्रूफ़ (प्रसिद्ध व परिचित) हैं जैसे–जुलाहा और खाल पकाने वाला और मोची और नाई।

असल किताब का फोटो कापी

فتاوی رضویہ جلد پنجم ۴۴ فہرست مضامین

پائی تھی کہ زید چلا گیا اور خبر نہیں کہ زندہ ہے یا مرگیا اب دریافت ہوا
تو وہ رافضی نکلا اور شراب خوری قماربازی علاوہ لیلے اور اُس کا باپ
سخت ناراض ہے لیلے جس کی عمر چودہ پندرہ سال ہے اب دوسری
جگہ اپنا عقد کرنا چاہتی ہے کیا حکم ہے۔
۴۴۳۔ زن بازاری کا لڑکا جب بالغ ہوا تو اُس نے اسلام قبول کیا پہلے
سے جو مسلمان ہے اُسے اپنی صغیرہ کا نکاح اُس کے ساتھ کردینا
جائز ہے یا نہیں۔
۴۴۴۔ زید نے اپنی دختر بالغہ کا نکاح عمرو سے کیا۔ وقت نکاح عمرو پر

۴۵۳۔ پیشہ ور جو اپنے ذلیل پیشوں کے ساتھ معروف ہوں اگر یہ
عالم ہوں جب بھی شرفا کے کفو نہیں ہوسکتے۔
〃 ۔ ہمارے بلاد میں سیدانیاں پٹھان یا مغل عالم سے عار نہیں کرتیں
ہاں ذلیل پیشے والے وہ اگر عالم ہوں جب بھی عار زائل نہیں ہوتی۔
〃 ۔ اگر ذلیل پیشہ وروں سے کوئی عالم ہوا اور وہ اپنے پیشہ کو اتنی مدت
سے چھوڑ چکا ہو کہ لوگ اُسے بھول گئے ہوں اور قلوب میں اس
شخص کی وقعت اور نگاہوں میں عظمت ہوگئی ہو اب اُس سے
شرفا کی بیٹیوں کو عار نہ ہو تو یہ بھی کفو ہو سکے گا۔

باب الکفائۃ ۴۵۴ کتاب النکاح

شرالخلق والخلیفۃ قال العلماء الخلق الناس والخلیفۃ البھائم نسأل اللہ السلامۃ والعفو والعافیۃ ثم اقول لا
یجب التقیید ایضا بما اذا لم یکن من المتناھین فی الدناءۃ المعروفین بھا کالحائک والدباغ والخصاف والحلاق ونظرائھم

अल मलफ़ूज़, भाग–2, पेज–200

हिन्दी तर्जुमा–:"इर्शाद–हुजूर का ये इर्शाद नहीं मगर ये बात है ज़रूर कि असल तय्यब (उम्दा–अच्छा) में अच्छी आदतें होती हैं और ज़लील में इसके ख़िलाफ़ हैं। इसीलिये पुराने ज़माने में इस्लामी सुल्तान (बादशाह) नीचों को ज़रूरत से ज़्यादा इल्म नहीं पढ़ने देते थे। अब देखो नाईयों और मनिहारों ने इल्म पढ़कर क्या–क्या फ़ित्ने फैला रखे हैं। कुछ मनिहार तो सय्यद और इब्ने शेर–ए–खुदा बन बैठे।"

असल किताब का फोटो कापी

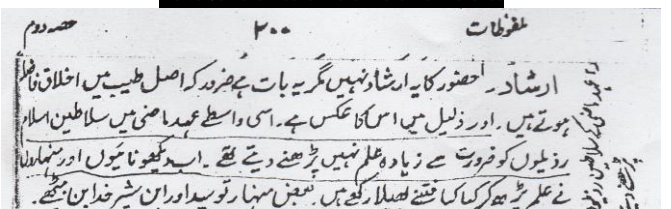

ملفوظات ۲۰۰ حصہ دوم

ارشاد۔ حضور کا یہ ارشاد نہیں مگر یہ بات ہے ضرور کہ اصل طیب میں اخلاق فاضلہ
ہوتے ہیں۔ اور ذلیل میں اس کا عکس ہے۔ اسی واسطے عہد ماضی میں سلاطین اسلام
رذیلوں کو ضرورت سے زیادہ علم نہیں پڑھنے دیتے تھے۔ اب دیکھو نائیوں اور منہاروں
نے علم پڑھ کر کیا کیا فتنے پھیلا رکھے ہیں۔ بعض منہار تو سید اور ابن شیر خدا بن بیٹھے۔

चैलेन्ज :– अगर कोई भी साहब इन हवालों को ग़लत साबित कर दें जो हमनें फोटो कापियों में पेश किये हैं तो

वो मुझे जो भी सज़ा देना चाहें मैं लेने को तैयार हूँ (लेखक)

आप में कोई भी साहब अगर ये हवाले आ़ला हज़रत की किताबों में देखकर मिलाना चाहते हों तो वो हमारे ''इस्लामिक रिसर्च एण्ड दा'वा सेण्टर'' में तशरीफ लायें। उन्हें (इन्शाअल्लाह) इसके अ़लावा भी कई ऐसे हवाले आ़ला हज़रत व दीगर बरेलवी ओ़लमा की किताबों से दिखाये जायेंगे जो कि सरासर कुरआन–ओ–हदीस के ख़िलाफ़ हैं और किसी मुसलमान के लिये उसका सोचना भी हराम है। नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) और आ़यशा (रजि0) की तौहीन तक उनकी किताबों में मौजूद हैं। इसके अ़लावा बेहयाई और अ़य्याशी की भरपूर ताअ़लीमात भी मौजूद हैं।

ऊपर दिये गये आ़ला हज़रत बरेलवी साहब के फ़त्वे व ताअ़लीमात को आपने पढ़ लिया और अब आईये इस बारे में, मैं आप लोगों के सामने अल्लाह तआ़ला का फ़रमान और हुक्म पेश करता हूँ। अपने घरों में रखे कुरआन पर लगे धूलों को साफ़ करिये, उसे खोलिये और देखिये, तर्जुमा ये है ''ऐ लोगो! हमने तुम्हें एक मर्द

और औ़रत से पैदा किया और तुम्हारी बहुत सी ज़ातियां और क़बीले बनाये, ताकि तुम एक–दूसरे को पहचान सको। अल्लाह के यहां तो तुममें सबसे ज़्यादा इज़्जत वाला तो वो है जो तुममें सबसे ज़्यादा परहेज़गार है। बेशक अल्लाह जानने वाला और ख़बर रखने वाला है।''(पारः26, सूरः हुजुरात, आयत–13) देखा आपने! अल्लाह तआ़ला का क्या फ़रमान है कि पेशे से या सादात, सय्यद, पठान होने से नहीं बल्कि मुत्तक़ी – परहेज़गार और अल्लाह से सबसे ज़्यादा डरने वाला ही अल्लाह तआ़ला के नज़रों में ऊँचा और बड़ा है और रही बिरादरियॉ, तो उन्हें सिर्फ़ पहचान के लिये अल्लाह तआ़ला ने बनाया है। ये तो रही कुरआन की ताअ़लीम लेकिन खॉ साहब (आ़ला हज़रत) अपने ख़ान साहबियत के रौब में अपने को बड़ा समझते हुए जुलाहों, खाल पकाने वालों, मोचियों, नाईयों और मनिहारों को ज़लील, नीच और घृणित व तिरस्कृत बता रहे हैं। फिर भी हमारे भोले–भाले नादान मुसलमान भाई और हमारे जुलाहा, खाल पकाने वाले, मोची, नाई और मनिहार भाई अपनी नावाक़फ़ियत की वजह से इन खॉ साहब को मुजद्दिद और इमाम व आ़ला हज़रत और इसी

तरह के न जाने कैसे–कैसे अल्क़ाबों से नवाज़कर उन्हें अपना पेशवा व रहबर तस्लीम किये बैठे हैं। न जाने उनकी ग़ैरत को क्या हो गया है, अरे ये सब पेशे तो न जाने कितने सहाबी (रज़ि0) और वलियों (रह0) ने भी किया होगा तो क्या वो सब भी (मआ़ज़ अल्लाह) ज़लील लोग थे? कुछ लोग, खॉ साहब जिसे हलाल लिखें उसे हलाल और जिसे हराम लिखें उसे हराम समझते हैं और खॉ साहब की इस वसीयत को पूरा कर रहें हैं कि –''जहॉ तक हो सके शरीअ़त की पैरवी न छोड़ो और मेरा दीन–ओ–मज़हब जो मेरी किताबों से ज़ाहिर है उस पर मज़बूती से क़ायम रहना हर फ़र्ज़ से अहम फर्ज़ है। अल्लाह तौफ़ीक़ दे।(वेसाया शरीफ़, पेज–26)

देख लिया आपने! शरीअ़त (कुरआन–ओ–हदीस) की पैरवी तो जहां तक हो सके यानि कि यथासंभव और जब उनकी ताअ़लीमात उनके दीने–ओ–मज़हब की बारी आयी, जो कि उनकी किताबों में लिखा है, उस पर जमे रहना हर फ़र्ज़ से अहम् फ़र्ज़ है। इससे पता चला कि खॉ साहब का दीन–ओ–मज़हब, शरीअ़त से हटकर है और अगर नहीं, तो फिर शरीअ़त की पैरवी पर ही मज़बूती से

जमे रहने की वसीयत करनी चाहिये थी पर उन्होंने ऐसा न करके अपनी किताबों में लिखे अपने दीन–ओ–मज़हब पर मज़बूती से जमे रहने की ताअ़लीम दी। ख़ैर ....खॉ साहब तो लिख–लिखाकर अपने अंजाम को पहुॅच गये पर आप लोगों को क्या हुआ है जो कि आप अल्लाह और रसूल के इन फ़रमानों को भुला बैठे हैं – ''इन्होंने अल्लाह के सिवा अपने आ़लिमों और दरवेशों को 'रब' बना लिया है''। (सूरः तौबा, आयत–31)। और आगे ये भी कि – ''ऐ ईमान लाने वालो! किताब वालों के ज़्यादातर आ़लिम और दरवेश लोगों का माल नाजायज़ तरीक़े से खाते हैं और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं।''(सूरः तौबा, आयत–34)।

इसी आयत के बारे में इसाईयत से इस्लाम क़ुबूल करने वाले सहाबी अ़दी बिन हातिम (रज़ि0) ने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) से पूछा था कि– ''ऐ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) इसमें जो आ़लिमों को 'रब' बनाने की बात अल्लाह तआ़ला ने कहा है तो हम उन्हें 'रब' तो नहीं समझते थे तो अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने कहा कि वो जिसे हलाल कहते थे उसे तुम भी हलाल और जिसे हराम कहते थे उसे तुम भी

हराम, नहीं समझते थे? तो उन्होंने कहा – हां, हम ऐसा तो करते थे, तो आप ने फ़रमाया– यही उन्हें 'रब' बनाना है। (मुस्नद अहमद, तिर्मिज़ी, इब्ने जरीर, बहवाला तफ़्सीर इब्ने कसीर)। बुजुर्गों और दोस्तों किसी इमाम, किसी मुजद्दिद, किसी आ़लिम, किसी पीर, किसी फ़क़ीर, किसी सज्जादानशीं, किसी बाबा को ये हक़ देकर उन्हें अपना 'रब' न बनायें और उन्हें हलाल–ओ–हराम,सही व ग़लत का हक़ न दें बल्कि खुद कुरआन–ओ–हदीस को पढ़ें, खुद देखें, खुद समझें, खुद तहक़ीक़ करें तब बात को मानकर अ़मल करें। अगर अ़रबी, उर्दू नहीं पढ़ सकें हैं तो आप उसकी ताअ़्लीम लें और तर्जुमे के साथ उसे पढें।

कुरआन की इन वाज़ेह ताअ़्लीमात के होते हुए भी खॉ साहब, आ़ला हज़रत ने इसे छिपाकर मुसलमानों में ऊॅच–नीच की ग़लत ताअ़्लीमात और अपना ग़लत ख़्याल व ग़लत फ़तवा लोगों को देते हुए उस पर मज़बूती से जमे रहने की जो ताअ़्लीमात दे गये हैं उसके लिए हम उन्हें कुछ नहीं कहेंगे पर अल्लाह तआ़ला का ये फ़रमान ज़रूर आपको बतायेंगे।

कुरआन

1. ''तबाही है उन लोगों के लिए जो अपने हाथ से 'किताब' लिखते हैं, फिर लोगों से कहते हैं : 'यह अल्लाह की ओर से है' ताकि उसके ज़रिये थोड़ी क़ीमत हासिल कर लें। तो उनके लिये तबाही है जो कुछ उनके हाथों ने लिखा उसके कारण और उनके लिये तबाही है जो कुछ वे कमाते हैं उसके कारण।''(सूरः बकरः, आयत–79)

2. ''बेशक जो लोग हमारी उतारी हुई रौशन (खुली–खुली) बातों और हिदायत को छिपाते हैं, इसके बाद कि हम उसे लोगों के लिए किताब में खोल कर बयान कर चुके हैं : उन पर अल्लाह की लानत (फिटकार) और लानत करने वालों की लानत।'' (सूरः बकरः, आयत–159)

<u>कुरआन की इन आयतों की रोशनी में हम अल्लाह तआ़ला की नज़रों में आ़ला हज़रत (खॉ साहब) का मुक़ाम अच्छी तरह से समझ सकते हैं।</u>

भाईयो! मैं आपकी ग़ैरत को आवाज़ देता हूँ कि वो कहॉ चली गयी कि अपने आपको **<u>नीच, ज़लील और तिरस्कृत</u>** कहने वाले की बातों को भी आपने ''कुरआन–ओ–हदीस'' की तरह हक़ समझ लिया है और ऐसे शख़्स को अपना पेशवा, इमाम और मुजद्दिद समझ

रखा है। आगे बढ़िये और आ़ला हज़रत की एक–एक ताअ़लीमात को आप कुरआन–ओ–हदीस से जॉचना–परखना शुरू कीजिए, तब देखिये आपको क्या–क्या पता चलता है कि इन खॉ साहब ने कैसे–कैसे, ऊल–जुलूल मसले और ग़लत अ़क़ाएद–ओ–ताअ़लीमात जो कि सरासर कुरआन–ओ–हदीस के ख़िलाफ़ हैं, आप लोगों में फैला रखा है और आपको जहन्नम में ले जाने का पूरा–पूरा इन्तज़ाम किया हुआ है। संजीदगी से और तास्सुब से हटकर अगर आप छान–बीन करें तो इन्शाअल्लाह हम भी आपका पूरा–पूरा सहयोग करेंगे और खॉ साहब के बारे में, मैंने जो कुछ भी लिखा है उसमें से अगर एक हवाला भी ग़लत हो तो आप मुझे जो भी सज़ा देना चाहेंगे, मैं भुगतने को तैयार हूँ। बस शर्त यह है कि खुले और साफ दिल–ओ–दिमाग़ से तहक़ीक़ करें और अल्लाह का ख़ौफ़ रखें।

(ये इश्तिहार सन् 2000 ई0 में, मिर्ज़ापुर (यू0पी0) में निकाला गया था)

एक लाख रू0 का ईनाम

कुछ वर्षों पहले कटरा कोतवाली के पीछे, ज़िला मिर्ज़ापुर में 25.08.1999 और 28.08.1999 को कुछ

ओलमा द्वारा तक़रीर की आड़ में **'मस्लक अहलेहदीस'** को काफ़ी बुरा–भला कहा गया। जिसमें मौ0 नौशाद, हाफ़िज़ निसार, मौ0उमेर, मस्त इलाहाबादी नाम के कुछ शिकम–परवर लोगों ने इस मुहल्ले के कम पढ़े–लिखे और भोले–भाले मुसलमानों को बजाए दीन की तब्लीग़ करने के बेबुनियाद, बेहूदा और बे–सिर पैर की बातें बकीं, और 'मस्लके अहलेहदीस' को और उसके मानने वलों को बहुत बुरा–भला कहा। जिसके नतीजे में दूसरे ही दिन उस मुहल्ले की मस्जिद से एक अहलेहदीस को निकाल दिया गया, उसे नमाज़ भी नहीं पढ़ने दिया। जब वो दूसरी मस्जिद में गया तो 'हाफ़िज़ निसार' वग़ैरह वहॉ भी निकालने को पहुॅचे और लोगों को अहलेहदीस के खिलाफ़ खूब भड़काया।

–:तक़रीर में कही गयी कुछ बातें:–

1. वहाबी अहलेहदीस का नम्बर 24 है और गिद्ध का भी नम्बर 24 है। गिद्ध मुर्दार खाता है, वहाबी कौआ खाता है।
2. मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का नम्बर 92 है। तो हमारा (बरेलवियों का) नम्बर भी 92 है।

नोट :– कुरआन की किस आयत या किस हदीस से तुमने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का नम्बर 92 लिया है? क्या ये नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की तौहीन नहीं?

3. वहाबियों के माथे पर काला निशान होता है (नमाज़ का) तो इनके दिल काले हो चुके हैं, जिससे छलक कर उनका माथा भी काला हो गया है।(लाहौल वला कुव्वत)

नोट :– जितने भी सहाबियों, वलियों के माथे पर नमाज़ के सजदों से जो काले निशान पड़ गये थे तो क्या उन सबके दिल काले थे? या आज भी जितने नमाज़ियों के माथे पर नमाज़ के काले निशान पड़े हैं तो क्या उनके दिल भी काले हैं? (मआ़ज़अल्लाह)

4. वहाबी ऊँचा (टख़नों तक) पाजामा पहनता है।

नोट :– क्या अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने मर्दों को ऊँचा (टख़नों तक) पाजामा पहनने को नहीं कहा है? क्या टख़नों के नीचे पाजामा पहनने

पर दोज़ख़ में उस हिस्से के जलने की वअ़ीद नहीं की है?

5. हमारे (बरेलवियों) दिलों में ईमान का ख़ज़ाना है, जिसे ये वहाबी लूटना चाहते हैं।

नोट :– अपने आ़ला हज़रत अहमद रज़ा ख़ॉ की ताअ़लीमात को ईमान का ख़ज़ाना कहते तुम्हें शर्म नहीं आती? तुम्हारा ये ईमान, तुम्हीं को मुबारक। वहाबियों को इसकी ज़रूरत नहीं।

6. कुरआन में है कि ''इताअ़त करो अल्लाह की इताअ़त करो रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की और इताअ़त करो हाकिमों की''।

फिर तश्रीह इस तरह किया कि हमारे हाकिम ख़्वाजा साहब हैं, बड़े पीर साहब हैं, हाजी अ़ली हैं। तो हम उनका फ़ातिहा कराते हैं, उनकी ज़ियारत को जाते हैं। तो इन वहाबियों को क्यों जलन होता है?

नोट :– क्या कुरआन की ये तश्रीह सही है? क्या कुरआन में ख़्वाजा, पीरान–ए–पीर या हाजी अ़ली साहब को ही हाकिम कहा गया है? वाह रे! तुम्हारी समझ, वाह रे! तुम्हारा ईमान। मारे घुटना फूटे सर।

7. वहाबियों को एक और नाम **'वहाबड़ा'** भी दिया गया। **नोट :– क्या ये अल्लाह तआ़ला के नाम 'वहाब' की बेहुरमती नहीं है?**

8. वहाबियों को काफ़िर और उनसे सलाम–कलाम मना किया गया।

नोट :– क्या ये कुरआन–ओ–हदीस से साबित कर सकते हैं? 9. अपने आपको असली 'अहलेहदीस' कहा कि 'हदीस' को तो हम (बरेलवी) मानते हैं, ये (अहलेहदीस) नहीं।

नोट :– हम चैलेन्ज करते हैं कि 'अहलेहदीस मस्लक' की कोई एक भी ऐसी बात दिखा दो जो कि 'मस्लक अहलेहदीस' में हो और वो नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) से साबित न हो। सिर्फ़ एक ही बात दिखला दो।

10. मस्लक अहलेहदीस की नमाज़ को कमतर और अपनी (हनफ़ी) नमाज़ को बालातर बताते हुए कहा कि 'ये रफ़ाअ् यदैन करते हैं, इमाम के पीछे सूरः फ़ातिहा पढ़ते हैं और आमीन ज़ोर से बोलते हैं।

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने पहले रफ़ाअ़ यदैन किया था बाद में मंसूख़ (रद्द) कर दिया था।

नोट :– अगर अपनी मॉ का दूध पिया है तो कोई एक भी हदीस मंसूख़ (रद्द) की दिखला दो तो हम तुम्हारी बात मानने को तैयार हैं। इन्शाअल्लाह क़यामत तक नहीं दिखला सकते हो।

इसके अ़लावा भी बहुत सी बातें अहलेहदीसों के ख़िलाफ़ कही गयीं और लोगों को ये तास्सुर देने की कोशिश की गई कि ये अहलेहदीस (वहाबी) नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को नहीं मानते, उनकी शान में गुस्ताख़ी करते हैं। दरूद नहीं पढ़ते, बुज़ुर्गों को नहीं मानते, और मुजद्दिदे आ़ला हज़रत ने इन वहाबियों को क़रारा जवाब दिया वग़ैरह–वग़ैरह।

बीच–बीच में मस्लके आ़ला हज़रत ज़िन्दाबाद! ख़्वाजा का दामन–नहीं छोड़ेंगे! ग़ौस का दामन–नहीं छोड़ेंगे। इस तरह के नारे लगाये जाते थे।

अरे भई! जिनका दामन न छोड़ने की बात कर रहे हो उनका दामन तो हम वहाबियों (अहलेहदीस) के पास है। तुम पहले उनका दामन पकड़ो तो सही,

ग़ौस वग़ैरह भी तो नमाज़ में रफ़ाअ् यदैन, इमाम के पीछे सूरः फातिहा, आमीन ज़ोर से कहते थे और सीने पर हाथ बांधते थे। तो क्या वो भी वहाबी थे?

उनकी तरह तो हम भी नमाज़ पढ़ते हैं **<u>अगर वो वहाबी थे तो फ़ख़्र से कहते हैं कि हम भी वहाबी हैं।</u>** भई ख़ूब रही, आपको बुज़ुर्ग भी मिला तो हमारी ही जमाअ़त का। ख़ैर ये तो एक कड़वी हक़ीक़त है कि आज तक जितने भी वली और बुज़ुर्ग हुए हैं वो सब के सब माशाअल्लाह अहले हदीस ही थे।

और रहा मस्लके आ़ला हज़रत की बात, तो आईये हम आपको, आपका असली चेहरा आईना में दिखाते हैं और अ़वाम को **<u>'मस्लके आ़ला हज़रत'</u>** से तआ़रूफ़ कराते हैं और ये दिखाते हैं कि 'मस्लके आ़ला हज़रत' में किस तरह अल्लाह की शान में, नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की शान में गुस्ताख़ियां की गयी हैं और भोली–भाली मुसलमान अ़वाम के अ़क़ाएद को बिगाड़कर उन्हें कुरआन–ओ–हदीस के ख़िलाफ़ 'रज़ाख़ानी दीन' पर चलने की दाअ़वत

दी जा रही है। उन्हें किस तरह जहन्नम की तरफ जाने वाले रास्ते पर ढकेला जा रहा है।

खुद ही अल्लाह और रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की शान में बेजा अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किया। अपनी किताबों में उनकी तौहीन की और उल्टा अहलेहदीस को बदनाम करते हैं कि वो अल्लाह और रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की शान में गुस्ताख़ी करते हैं। उन्हें मानते नहीं।

सुन लो अहलेहदीस सिर्फ़ और सिर्फ़ **अल्लाह और रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम)** की ही बात (कुरआन–ओ–हदीस) को मानते हैं।

उल्टा चोर कोतवाल को डांटे!

अब अपने दिल थामकर बैठिये और पढ़िये मस्लके आ़ला हज़रत की सच्चाई और पूछिये इन शिकम परवर, झूठे, बिद्अ़ती ओ़लमा से कि क्या ये बातें 'मस्लके आ़ला हज़रत' में नहीं हैं? अगर उनकी किताबों में ये बातें नहीं होंगी तो **1 लाख रूपये नक़द ईनाम** दिया जायेगा और अगर कहते हैं कि हॉ – ये बातें हमारे किताबों में मौजूद

हैं, तो इन बिद्अ़ती मुल्लाओं से पूछिये कि ये बातें कुरआन की किन आयतों से या हदीस की किन किताबों से लिया गया है। कुरआन या सही हदीसों में इन बातों को दिखला दें तब भी **1 लाख रूपये नक़द ईनाम** दिया जायेगा।

ख़ास तौर से मौ0 **नौशाद, हाफ़िज़ निसार, मौ0उमेर, मस्त इलाहाबादी (शायर)** वग़ैरह को ये खुला चैलेन्ज है कि–अगर अपनी मॉ का दूध पिया है, तो अपने मस्लक (मस्लके आ़ला हज़रत) की इन बातों का जवाब दें–अगर नहीं दे सकते और (इन्शाअल्लाह) यक़ीनन नहीं दे सकते हैं। तो अब भी वक़्त है, तौबा कर लें और भोली–भाली मुसलमान अ़वाम को बहकाने की कोशिश छोड़कर खुद भी कुरआन–ओ–हदीस पर अ़मल करें और अ़वाम को सिर्फ़ और सिर्फ़ कुरआन–ओ–हदीस की ताअ़्लीम दें। अल्लाह का ख़ौफ़ करें और ये याद रक्खें कि आज जो कुछ भी वो कर रहे हैं, अल्लाह तआ़ला उससे बखूबी वाक़िफ़ है। और कल उसके सामने पेश होकर अपने आ़मालों का हिसाब देना है, अल्लाह ताअ़्ला

हमें हक़ कहने, हक़ सुनने और हक़ पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। (आमीन)

मस्लके आ़लाहज़रत की कुछ झलकियां

न तुम सदमे हमें देते, न हम फ़रियाद यूँ करते।
न खुलते राज़ सरबस्तां, न ये रूसवाईयां होतीं।।

1. अंबिया (अ़लै0) की क़ब्रों में बीवियां पेश

अंबिया अ़लैहिमुस्सलातोवस्सलाम की क़ब्रों में अज़्वाजे मोतहरात (बीवियां) पेश की जाती हैं, वो उनके साथ शबे–बाशी (सोहबत) फ़रमाते हैं। (मआ़ज़अल्लाह) (अल–मलफ़ूज़,भाग–3, पेज–245, आ़ला हज़रत)

नोटः–कौन मुसलमान ऐसा होगा, जिसका ये अक़ीदा हो कि नबियों की क़ब्रों में बीवियां पेश होती हैं, और वो उनसे सोहबत करते हैं अगर ऐसा होता है तो सोहबत के बाद ग़ुस्ल भी करते होंगे और उन्हें बच्चे भी पैदा होते होंगे। (मआ़ज़अल्लाह) इसका जवाब तो मस्लके आ़ला हज़रत वाले ही दे सकते हैं।

2. शेख़ का मज़ार से क़रीब हिबः करना

हज़रत सय्यदी अ़ब्दुल वहाब, अकाबिरे औलिया–ए–कराम में से हैं। अपने शेख़ हज़रत सय्यदी अहमद बदवी कबीर

के उर्स में आई हुई एक क़नीज़ को देखते हैं तो उसे पसन्द कर लेते हैं। उनके शेख़ (मज़ार में से) उन्हें वो लड़की हिबः कर देते हैं और कहते हैं कि – ''अब देर काहे की है, फ़लां हुजरे में ले जाओ और अपनी हाजत पूरी करो।''

(अल–मलफूज़, भाग–3, पेज–245, आ़ला हज़रत बरेलवी)

नोटः– ये हैं मस्लके आ़ला हज़रत के औलिया–ए–कराम और ये हैं उनके मुरीद। जिन्हें उनके शेख़ मरने के बाद भी मज़ार में से क़नीज़ भेंट कर रहे हैं। अब समझ में आया कि मज़ारों के पास ये हुजरे क्यूँ बनाये जाते हैं, वाह–रे! मस्लके आ़ला हज़रत।

3. <u>खुदा की बीवी</u>

सय्यदी मूसा सुहाग, खुदा की बीवी। (मआ़ज़अल्लाह)

(अल–मलफूज़, भाग–2, पेज–184–185 आ़ला हज़रत)

नोटः–शायद खुदा से इनका निकाह भी आ़ला हज़रत ने ही पढ़ाया होगा। (मआ़ज़अल्लाह)

4. <u>अंबिया (अलै0) के नुत्फ़े एवं पेशाब पाक</u>

अंबिया (अ़लै0) के नुत्फ़े कि उनका पेशाब भी पाक है।

(फ़तावा रज़विया, भाग–2, पेज–138)

नोटः– जब नुत्फ़े और पेशाब पाक हैं तो गुस्ल या इस्तिन्जा में पानी क्यूँ लेते थे? इसका जवाब तो मस्लके आ़ला हज़रत के ओ़लमा ही दे सकते हैं।

5. तवायफ की कमाई हलाल

तवायफ़ ने फ़ातिहा के लिये शीरनी ख़रीदी और उसका पैसा क़र्ज़ के त़ौर पर बाद में अपने माल हराम से दे दिया तो वो शीरनी हलाल होगी। अगर अपना माल हराम दिखाकर उसके बदले में शीरनी लिया तो वो शीरनी हराम होगी।

(अहकामे शरीअ़त, भाग–2, पेज–144, 145 आ़ला हज़रत बरेलवी)

नोटः–वाह रे! आ़ला हज़रत हराम को हलाल करना कोई आपसे सीखे।

6. सूद, शराब, रिश्वत की कमाई हलाल करने का तरीक़ा

मस्जिद मदरसा बनवाने में रूपये नहीं लगते बल्कि सामान (ईंट, सीमेन्ट, बालू, वगैरह–2) लगते हैं। अगर सूद, शराब, या रिश्वत की कमाई के पैसे दिखाकर सामान लेते वक़्त ये न कहा गया हो कि इसके बदले फ़लां चीज़ दे, तो जो चीज़ ख़रीदी वो ख़बीस नहीं होती। इस तरह से लिये गये सामान के फ़ातिहा, उर्स का खाना, जाएज़ है और इस तरह से लिये गये सामानों से बनायी गयी मस्जिद में नमाज़, मदरसे में पढ़ना जाएज़ है। (अहकामे शरीअ़त, भाग–1, पेज–110 आ़ला हज़रत बरेलवी)

नोटः— वाह भाई वाह! फ़ातिहा, उर्स के खाने को खाने के लिये सूद, शराब, रिश्वत भी हलाल कर डाला। बजाए उस पर वअ़ीद के और हौसला अफ़ज़ाई की जा रही है। अल्लाह हिदायत दे।

7. शैतान—मेहबूबाने खुदा (वली अल्लाह)

शैतान मेहबूबाने खुदा है। जो कि दूर से भी देखता—सुनता और मदद करता है। (कंजुल ईमान, अज़ आ़ला हज़रत बरेलवी)

नोटः— आ़ला हज़रत के कुरआन के तर्जुमे (कंजुल ईमान) में इसके अ़लावा भी बहुत सी खुराफ़ातें भरी पड़ी हैं। यक़ीन न हो तो उसकी **"फेहरिस्त मज़ामीन"** देखिये और उसमें दिये गये आयतों के हवाले निकालकर तर्जुमा उसी में देख लीजिये, हक़ीक़त रोज़े रोशन की तरह साफ़ हो जायेगी। (इन्शाअल्लाह)

8. जुलाहे वग़ैरह ज़लील हैं

जुलाहे, खाल पकाने वाले, मोची और नाई इनकी तरह ज़लील पेशेवर जो अपने ज़लील पेशों के साथ मसरूफ़ हैं, कितने भी बड़े आ़लिम हो जाएं पर शरीफ़ों के बराबर नहीं हो सकते। (फ़तावा रज़विया, भाग—5, आ़ला हज़रत बरेलवी)

इनके अ़लावा नाई और मनिहारों को भी ज़लील लिखा है।

(अल–मलफ़ूज़)

नोटः– न जाने कितने सहाबियों ने, कितने वलियों ने इन पेशों को अपनाया था तो क्या वो सब ज़लील थे? (मआ़ज़अल्लाह) इसका जवाब मस्लके आ़ला हज़रत के ओ़लमा से ही पूछिये।

9. चॉदी और सोने की घड़ी रखना जायज़ टाईम देखना नाजायज़

चॉदी और सोने की घड़ी रख सकता है। अलबत्ता उसमें वक़्त नहीं देख सकता, कि हराम है।

(अल–मलफ़ूज़, भाग–3, पेज–220, आ़ला हज़रत बरेलवी)

नोटः–तो घड़ी रखकर क्या करेगा। ज़रा इनसे पूछिये।

10. आ़ला हज़रत के लिये सुन्नतें माफ़

मैं अपनी हालत वो पाता हूँ, जिसमें फ़ोक़हा–ए– कराम ने लिखा है कि सुन्नतें भी ऐसे शख़्स को माफ़ हैं। लेकिन अल–हम्दुलिल्लाह, सुन्नतें कभी न छोड़ीं। नफ़िल अलबत्ता उसी दिन से छोड़ दिये। (अल–मलफ़ूज़, भाग–4 पेज–346, आ़ला हज़रत बरेलवी)

नोटः– अल्लाह की पनाह आ़ला हज़रत साहब कुछ दिनों और ज़िन्दा रहते तो शायद फ़र्ज़ भी अपने लिये माफ़ कर लेते।

11. 18–20 साल की बच्ची मॉ का दूध पीती थी

मैंने खुद देखा गांव में एक लड़की 18 या 20 साल की थी। मॉ उसकी ज़ईफ़ (बूढ़ी) थी। उसका दूध उस वक़्त तक न छुड़ाया था। मॉ हर चन्द मना करती, वो ज़ोर आवर थी। पछाड़ती और सीने पर चढ़कर दूध पीने लगती।

(अल–मलफ़ूज़, भाग–3, पेज–278,)

नोटः–ऐसे थे आ़ला हज़रत। जो कि एक बूढ़ी औ़रत के सीने में दूध उतार रहे हैं, जिसे 18–20 साल की जवान बेटी पटक कर और सीने पर चढ़कर दूध पीने लगती है और ये मुजद्दिदे दीन–ए–मिल्लत, आ़ला हज़रत खड़े होकर बेशर्मी से ये सब नज़ारा देखते रहते हैं।

12. हामिलः औ़रत को बच्चा आधा पैदा हुआ तब भी नमाज़

किसी हामिलः औ़रत को आधा बच्चा पैदा हो लिया है, और नमाज़ का वक़्त आ गया तो अभी नफ़ा नहीं। हुक्म है कि गढ़ा खोदे या देग पर बैठे और इस तरह नमाज़ पढ़े कि बच्चे को तकलीफ़ न हो। (अल–मलफ़ूज़, भाग–2, पेज–185)

नोटः—ये तो बरेलवी ओलमा ही बता सकते हैं कि अपने आ़ला हज़रत की बात को मानते हुए, अपनी बीवियों को भी इस हालत में जबकि आधा बच्चा पैदा हो चुका हो अभी जिस्म से गन्दा पानी और खून बह रहा हो, तो नमाज़ पढ़ने की ताकीद करते हैं या नहीं।

13. रंडी को मकान किराये पर देना कोई गुनाह नहीं

उसका उस मकान में रहना कोई गुनाह नहीं। रहने वास्ते किराये पर देना कोई गुनाह नहीं। बाक़ी रहा उसका ज़िना करना, ये उसका फ़ेअ़ल है। (अल—मलफ़ूज़, भाग—3, पेज—248)

नोटः—रंडी को मकान किराये पर देना **कोई गुनाह नहीं,** उसकी हराम पैसों की **शीरनी हलाल है।** न जाने आ़ला हज़रत को इन रंडियों से इतनी हमदर्दी क्यों थी? दरअसल उन्हीं के मुहल्ले में इनका मकान था, शायद इसीलिए।

14. मस्लके आ़ला हज़रत में रसूले खुदा हाज़िर—ओ—नाज़िर

हर जगह हाज़िर ओ नाज़िर होना खुदा की सिफ़त हर्गिज़ नहीं..... कुछ आगे चलकर लिखा—खुदा को हर जगह में

मानना बे दीनी है। **<u>हर जगह में होना तो रसूले खुदा ही की शान है।</u>** (मआ़ज़अल्लाह) (जा ऽ हक़ पेज 153,भाग–1,अज़ अहमद यार खाँ)

नोटः– क्या कोई बरेलवी ओ़लमा, रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को हाज़िर–ओ–नाज़िर होने की दलील (कुरआन–ओ–सुन्नत से) दे सकता है?

15. <u>बेनमाज़ी का फ़िद्या</u>

कोई बेनमाज़ी मर जाये तो मर्द के लिये 12 साल, औरत के लिये 9 साल नाबालिग़ी के, निकालकर बाक़ी बचे सालों में, रोज़ाना 6 वक़्त की नमाज़ के हिसाब से तमाम साल का जोड़कर, जो फ़ितरः की मिक़दार है उसी के बराबर एक वक़्त की नमाज़ का ग़ल्ला जोड़कर, ख़ैरात करके नमाज़ और इसी तरह रोज़ा और ज़कात का फ़िद्या अदा करें।

ग़रीब आदमी कुछ दिन, हफ़्ते या महीने का ग़ल्ला निकालकर किसी मिस्कीन को दे, वे मिस्कीन बतौर हिबः फिर उसे ग़रीब को दे इसी तरह घुमाते रहें जब तक कि तमाम साल की नमाज़ों, रोज़ा और ज़कात का फ़िद्या अदा न हो जाये।

(जा ड ल हक, भाग–1, पेज– 365)

नोटः—अब बरेलवियों को क्या ग़म है। नमाज़ें, रोज़ा, ज़कात सब छोड़े बैठे हैं तो क्या हुआ? उनके घर वाले उनके मरने के बाद फ़िद्या अदा कर देंगे। अल्लाह जाने इनकी अ़क़्लों को क्या हो गया है। (लाहौल वला कुव्वत)

16. **<u>सहाबी (रज़ि0) या ताबई (रह0) को काफ़िर लिखा</u>**

अ़ब्दुर्रहमान (रज़ि0) जिन्हें (तहज़ीबुत्तहज़ीब भाग—2, पेज—223 और तक़रीबुत्तहज़ीब, पेज—315) में, सहाबा में शुमार किया गया है। अगर एक कमज़ोर क़ौल से उन्हें सहाबी न तस्लीम किया जाये फिर भी ताबई होना सब को मुसल्लम है। फिर भी खॉ साहब को देखिये कि एक ज़लीलुल क़द्र ताबई को 'काफ़िर' लिख दिया है। इबारत ये है ''एक बार अ़ब्दुर्रहमान क़ारी कि ''काफ़िर था।''(अल—मलफ़ूज़,भाग—2, पेज—146)

17. **<u>मुरीद जब बीवी से सोहबत करता है तो शेख़ देखता रहता है</u>** शेख़ मुरीद से कभी जुदा नहीं होता। हर आन उसके साथ है। हत्ता कि जब मुरीद अपनी बीवी से हम बिस्तरी करता है तो पास में रखे खाली पलंग पर शेख़ बैठकर सब नज़ारा देखता रहता है। (अल—मलफ़ूज़, भाग—2, पेज—150)

नोटः— वाह रे, शेख़ साहब। मुरीद बनाओ और मुफ़्त में नज़ारा करो। तुम्हें तो 'ब्लू' फ़िल्म देखने के लिये पैसे भी ख़र्च करने की ज़रूरत नहीं।

18. पीरान—ए—पीर के "वाअ्ज़" में हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम)

वली क्या मुरसल आयें, खुद हुज़ूर (सल्ल0) आयें।

वो तेरी वाअ्ज़ की महफ़िल है या ग़ौस।

(हदाएक—ए—बख़्शिश, भाग—2, पेज—6, आ़ला हज़रत बरेलवी)

नोटः—कुछ समझे आप? यानि की पीरान—ए—पीर साहब की वाअ्ज़ इतनी जामेअ् व बसीर है कि तमाम वली, तमाम रसूल और खुद हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) उसे सुनने आयें।

क़ायदा यह है कि हमेशा कम इ़ल्म वाले, ज़्यादा इ़ल्म वालों का वाअ्ज़ सुना करते हैं। मोहताजे हिदायत तालिब इ़ल्म, ओ़लमा के वाअ्ज़ में जाया करते हैं। बरेलवियों के आ़ला हज़रत तमाम वलियों, रसूलों और खुद रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के इ़ल्म को पीरान—ए—पीर साहब के इ़ल्म से कम मानते हैं। (मआ़ज़अल्लाह)

ये है रसूलों की शान में तौहीन। ये हैं गुस्ताख़े रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम)। अब ज़रा दिल की धड़कनों पे क़ाबू रखते हुए अपने होशो—हवास को क़ायम रखते हुए आगे

पढ़ें, और देखिये कि ये ''मस्लके आ़ला हज़रत'' के नाम से किस क़द्र इस्लाम के ख़िलाफ़ कलमात इस्तेमाल करते हुए अपना एक नया मज़हब ईजाद किये हुए हैं।

19. इमाम, वली और रसूल पीरान–ए–पीर के दर के भिखारी

कोई सालिक, कोई वासिल है या ग़ौस!
वो कुछ भी हो, तेरा साइल है या ग़ौस! (हदाएक–ए–बख़्शिश,भाग–2, पेज–6)

नोटः– तसव्वुफ़ की इस्तेलाह में **'सालिक'** कहते हैं, इबादत गुज़ार, मुजाहिदा व रियाज़त करने वाले औलिया अल्लाह को। और **'वासिल'** कहते हैं अल्लाह तआ़ला की कुर्बत व मेहबूबियत तक पहुँचे हुए हज़रात (यानि अंबिया अलैहिस्सलाम) को। अब तो मतलब समझ में आ गया होगा? अगर नहीं– तो आईये और खुलासा करते हैं– कोई वली हो, पैग़म्बर या नबी हो (अल्लाह की कुर्बत में पहुँचे हुए लोग) ख़्वाह कोई हो। या ग़ौस! वो आपके दर का साइल और भिखारी है। (मआ़ज़अल्लाह)

20. खुलेआम कुरआन की मुखालिफ़त

रब्बुल इ़ज़्ज़त तबारक तआ़ला ने ''चार दिन में आसमान'' और दो दिन में ज़मीन यकशुंबा ता चहार शुंबा आसमान, पंज शुंबा ता जुमा ज़मीन.....को पैदा किया।

(अल–मलफ़ूज़, भाग–1, पेज–6, आ़ला हज़रत बरेलवी)

नोटः– अल्लाह तआ़ला ने कुरआन मजीद में साफ़–साफ़ फ़रमा दिया है कि–''तो उन्हें पूरे सात आसमान कर दिया 2 दिन में और हर आसमान में उसके काम के एहकाम भेजे।''(सूरः हामीम, अस्सजदा, पारः 24) बरेलवियों के आ़ला हज़रत का कहना ये है कि अल्लाह तआला ने ''चार दिन'' में आसमान (इतवार से बुध तक) पैदा किया।

जबकि कुरआन मजीद साफ़–साफ़ बता रहा है कि ''2 दिन में आसमान'' पैदा किया। और ऊपर लिखा तर्जुमा भी खुद आ़ला हज़रत ने ही किया है। अब आप खुद ही समझें कि ये खुलेआम कुरआन की मुख़ालिफ़त है या नहीं? किसी बात को जब अल्लाह तआ़ला ने साफ़–साफ़ ''**2 दिन में**'' बता दिया है, तो उसी बात को आप **''4 दिन में''** बताकर क्या साबित करना चाहते हैं? कुरआन के एक हरूफ़ का इन्कार भी ''काफ़िर'' बना देता है। इसे आप क्या कहेंगे? इन्कार या इक़रार? सिर्फ़ यही नहीं, बल्कि इसी तरह से और भी आयतों का इन्कार अपनी किताबों में लिखा है। नमूने के लिए सिर्फ़ एक ही काफ़ी है।

21. **मर्द की पहचान (मस्लके आ़ला हज़रत में)**

मर्द वो नहीं जो ''तमाम आ़लम'' को अंगूठे के नाखून के मिस्ल न देखे। (अल–मलफ़ूज़, भाग–1, पेज–26, आ़ला हज़रत बरेलवी)

नोटः– अब आप सभी लोग अपना–अपना जायज़ा ले लें कि ''तमाम आ़लम'' को आप अंगूठे के नाखून की तरह देख सकते हैं तब तो आप ''मर्द'' हैं–वरना आप नामर्द। जी हां, आ़ला हज़रत की ''अल–मलफूज़'' उठाकर देखें तब तो यक़ीन होगा? मर्द और नामर्द क्या खूब पहचान बतायी है। अब मस्लके आ़ला हज़रत के ओ़लमा का अपने बारे में क्या ख़्याल है, ये तो वही जानें।

22. पहले दिन हराम दूसरे दिन हलाल

अर्ज़–काफ़िर होली–दीवाली में मिठाई वग़ैरह बांटते हैं, मुसलमानों को लेना जायज़ है या नहीं?

इरशाद–उस रोज़ न लें, हॉ अगर दूसरे रोज़ दे तो ले ले, न ये समझकर कि उन ख़ोब्सा के त्योहार की मिठाई है। बल्कि ''माल मोज़ी, नसीब ग़ाज़ी'' समझे। (अल–मलफूज़, भाग–1 पेज–91)

नोटः–वाह रे! आ़ला हज़रत। आपके जवाब भी आप ही की तरह आ़ला–आ़ला हैं।

23. ब्राह्मण से निकाह पढ़वाना जायज़

अर्ज़–अगर वहाबी निकाह पढ़ाये तो हो जायेगा या नहीं?

इरशाद –निकाह तो हो ही जायेगा इस वास्ते कि निकाह नाम बाहेमी ईजाब–ओ–कुबूल का है, अगरचे बामन

(ब्राह्मण) पढ़ावे। चूँकि वहाबी से पढ़वाने में उसकी ताज़ीम होती है, जो हराम

है। लिहाज़ा एहतराज़ लाज़िम है। (अल–मलफ़ूज़, भाग–3, पेज–232)

नोटः–लीजिये आपको आ़ला हज़रत का सर्टिफिकेट मिल गया। अब अगर आपको निकाह पढ़वाने के लिए **'बरेलवी मौलवी'** न मिलें तो आप पण्डित जी (ब्राह्मण) को बुलाकर निकाह पढ़वा सकते हैं–पर याद रहे, भूल कर भी वहाबी से निकाह मत पढ़वाईयेगा, क्योंकि उनकी इज़्ज़त, ताज़ीम भी हराम है। (लाहौल वला कुव्वत) वाह रे! वहाबी दुश्मनी।

24. **मुतबर्रक नाम अंगूठी में पहनकर बैतुलख़ला.....**

अंगूठी में अगर मुतबर्रक नाम (खुदवाये या लिखवाये गये) हों तो पहनकर बैतुलख़ला में जाना नाजायज़ है। हां–जेब में रख लें तो हर्ज़ नहीं। (अल–मलफ़ूज़, भाग–3, पेज–219)

नोटः– यानि, पाक नाम अंगूठी में खुदे हों तो जेब में रखकर पाख़ाने में जा सकते हैं। इससे बेअदबी नहीं होगी। वाह रे! मस्लके आ़ला हज़रत।

25. **अम्मा आ़यशा सिद्दीक़ः (रज़ि0) की शान में गुस्ताख़ी**

''तंग–ओ–चुस्त उनका लिबास, और वो जोबन का उभार, सरकी जाती है क़बा, सर से कमर तक लेकर।

ये फटा पड़ता है जोबन, मेरे दिल की सूरत,
कि हुए जाते हैं जामें से बरूं सीना ओ बर।।''

(हदाएक़–ए–बख़्शिश, भाग–3, पेज–37, आ़ला हज़रत बरेलवी)

नोटः–ये क़सीदा आ़यशा सिद्दीक़ः (रज़ि0) की शान में आ़ला हज़रत मुजद्दिदे दीने मिल्लत, इमाम अहले सुन्नत अहमद रज़ा खॉ साहब लिखे हुए हैं। हालांकि बाद में मेहबूब अली साहब ने उनकी तरफ से तौबानामा छपवाकर इसे छापना बन्द कर दिया है। पर इससे क्या होता है, लिखने वाले आ़ला हज़रत तो लिखकर ऊपर जा चुके हैं। अब आपके तौबा से उन्हें क्या फ़ायदा?

मुसलमानो! ज़रा सोचिये जो शख़्स (आ़ला हज़रत) अल्लाह तआ़ला के हबीब हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की मोहतरम उम्मुल मोमनीन हज़रत सिद्दीक़ः ताहिरा (रज़ि0) की शाने अ़क़्दस में ये बाज़ारी ज़बान इस्तेमाल करता है। अन्दाज़ा किया जा सकता है कि उसकी ज़ेहनियत किस तरह ग़लीज़ है और वो शर्म–ओ–हया के ईमानी अंसर से कितना महरूम है।

26. <u>मरने से पहले वसीयत</u>

आ़ला हज़रत ने मरने से तकरीबन 2 घण्टे पहले **वसीयतनामा** लिखवाया था। जिसमें बारहवीं नं0 की वसीयत ये है– ''अ़ज़ीज़ों से अगर बतीब ख़ातिर मुमकिन हो सके तो फ़ातिहा में हफ़्ता में 2–3 बार इन अशिया ऽ से भी कुछ भेज दिया करें–(1) दूध का बर्फ़ ख़ाना साज़ (घरेलू आईस्क्रीम) अगरचे भैंस की दूध का हो। (2) मुर्ग़ की बिरयानी (3) मुर्ग़ पुलाव (4) ख़्वाह बकरी का शामी क़बाब (5) पराठे और मलाई (6) मलाई (7) फ़ीरनी (8) उड़द की फुरेरी दाल मय अदरक–ओ–लवाज़िम (9) गोश्त भरी कचौड़ियां (10) सेब का पानी (11) अनार का पानी (12) सोडे की बोतल (13) दूध का बर्फ़ (दुबारा लिखवाया)। (वेसाया शरीफ़ आ़ला हज़रत बरेलवी) इस वसीयत को हसनैन रज़ा ने तरतीब देकर छपवाया। हम इस वसीयत पर कोई तब्सरा करने की ज़रूरत नहीं समझते ये वसीयत आ़ला हज़रत के ज़ौक़–ओ–मिज़ाज और उनकी ज़िन्दगी के रूख़ और उनके नस्बुल ऐन का पूरा आईना है। जिस शख़्स को मरने के समय भी इतने खानों के नाम याद रहें और बजाये कुरआन–ओ–सुन्नत की बातों का हुक़्म देने के, उनको अपने लिये फ़ातिहा में मंगाने का इन्तज़ाम कर रहा हो। उसने अपनी ज़िन्दगी में इन और इन जैसे और लज़ीज़ खानों के लिये अल्लाह जाने क्या–क्या किया होगा। खानों की लिस्ट में ''सोडे की

बोतल'' भी लिखवाया, ताकि (शायद) खाना हज़म करने में आसानी हो।

27. **मस्लके आ़ला हज़रत पर क़ायम रहना हर फ़र्ज़ से अहम फ़र्ज़** ''हत्तल एमकान इत्तबा–ए–शरीअ़त न छोड़ो। मेरा दीन–ओ–मज़हब जो मेरी कुतुब (किताबों) से ज़ाहिर है उस पर मज़बूती से क़ायम रहना हर फ़र्ज़ से अहम फ़र्ज़ है। (वेसाया शरीफ, पेज–10, तर्तीब हसनैन रज़ा)

नोटः– कुछ समझे आप? यानि कुरआन–ओ–हदीस पर जहॉ तक हो सके अ़मल करना। लेकिन मेरा दीन–ओ–मज़हब (मस्लके आ़ला हज़रत) जो मैंने किताबों में लिखा है (जिसकी कुछ झलकियां भी ऊपर गुज़र चुकी है) उस पर मज़बूती और पूरी ढिठाई से डटे रहना हर फ़र्ज़ से अहम फ़र्ज़ है।

अब तो आप समझ ही गये होंगे कि ये शिकम परवर लोग इतनी मज़बूती से मस्लके आ़ला हज़रत से क्यूँ चिमटे हैं। क्योंकि ये उनके आक़ा (आ़ला हजरत) का फ़रमान है। अल्लाह की नाफ़रमानी हो तो हो जाये पर आ़ला हज़रत की नाफ़रमानी नहीं होनी चाहिये। नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) का फ़रमान न माने तो कोई बात नहीं पर उनके

नबी (आ़ला हज़रत) का फ़रमान तो मानना हर फ़र्ज़ से अहम फ़र्ज़ है।

(मआ़ज़अल्लाह)

28.**<u>आ़ला हज़रत–बरेलवियों के अल्लाह और रसूल</u>** (मआ़ज़अल्लाह)

ख़ल्क़ के हाजत र वा अहमद रज़ा,
है, मेरा मुश्किल कुशा अहमद रज़ा।
कौन देता है मुझको, किसने दिया,
जो दिया, तुमने दिया अहमद रज़ा।
दोनों आ़लम में है तेरा आसरा,
हां– मदद फ़रमा, शहा अहमद रज़ा।
हश्र में हो जब क़यामत की तपिश,
अपने दामन में छिपा अहमद रज़ा,
जब ज़बानें सूख जायें प्यास से,
जामे कौसर का पिला अहमद रज़ा।
क़ब्र–ओ–नश्र–ओ–हश्र में तू साथ दे,
हो मेरा मुश्किल कुशा अहमद रज़ा।
तू है दाता और मैं मंगता तेरा,
मैं तेरा हूँ और तू मेरा अहमद रज़ा।

(नग़मतुर्रूह, पेज–47,48 अय्यूब रज़वी)

नोटः– देखा आपने! ख़ल्क़ के हाजत र वा कौन हैं? अल्लाह तआ़ला नहीं अहमद रज़ा। दोनों आ़लम में किसका आसरा है? अहमद रज़ा का। कौन नहीं जानता कि साक़िये कौसर हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) हैं। लेकिन इन बदबख़्तों ने वो भी दर्जा अपने आ़ला हज़रत को दे रक्खा है। कब्र–हश्र–नश्र में साथ किसका मॉग रहे हैं? अहमद रज़ा का!

(लाहौल वला कुव्वत)

ये तो चन्द नमूने हैं, ''मस्लके आ़ला हज़रत'' के। इनकी किताबें पढ़िये तो आप हैरान रह जायेंगे कि ये किसी मुसलमान की लिखी किताबें हैं या किसी यहूदी, शिया के एजेण्टों की। इस तरह की न जाने कितने ग़लत अ़क़ाएद और मसाएल इन्होंने इस्लाम के नाम पर गढ़ और बना रखे हैं। जिनका रद्द शुरू से ही ''ओ़लमा–ए–अहलेहदीस'' की तरफ़ से किताबों में लिखकर स्टेजों से बोलकर किया जाता रहा है। इनकी पूरी तारीख़–ओ–अ़क़ाएद की जानकारी के लिये आप पढ़ें पाकिस्तान के मशहूर अ़ल्लामा एहसान इलाही ज़हीर (रह0) की लिखी किताब **''बरेलवियत–तारीख़–ओ–अ़क़ाएद''।**

ये किताब पढ़ने वाले सभी सुन्नी (बरेलवी) भाईयों से एक बात ज़रूर कहना है कि अब बहुत हो चुका। ग़फ़लत की चादर फेंको और होश में आओ। अपने इन पेट के पुजारी मुल्लाओं से पूछें कि ये सब क्या है? अगर वो कहते हैं कि ये सब झूठ हैं, तो आप खुद 'हवाला' दिये गये किताबों को बरेली से या जहॉ–जहॉ से छपे हैं, वहॉ से मंगाकर खुद देखें। फिर इनसे पूछें कि ये कौन सा इस्लाम है? ये कौन सा दीन है? अगर हमें बुरा भला या झूठा कहें – तो उनसे कहिये कि अगर अपने दावे में वो सच्चे हों तो इन हवालों को ग़लत साबित करके **एक लाख रूपये ईनाम** ले लें। या इन हवालों को कुरआन–ओ–सही हदीसों में दिखला दें। अब इससे बढ़कर और क्या चाहते हैं, ''हक़–ओ–बातिल'' का फ़र्क़ करने के लिये।

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि वो हम सभी दीनी भाईयों के दिलों में अपने नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की सच्ची मुहब्बत पैदा कर दे और उनकी इताअ़त करने वाला पक्का मोमिन बना दे। हमें इस तरह की ग़लत बातों व ग़लत अ़क़ाएद से महफ़ूज़ रखे और कुरआन–ओ–सुन्नत

की ताअ़्लीमात पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये। (आमीन)